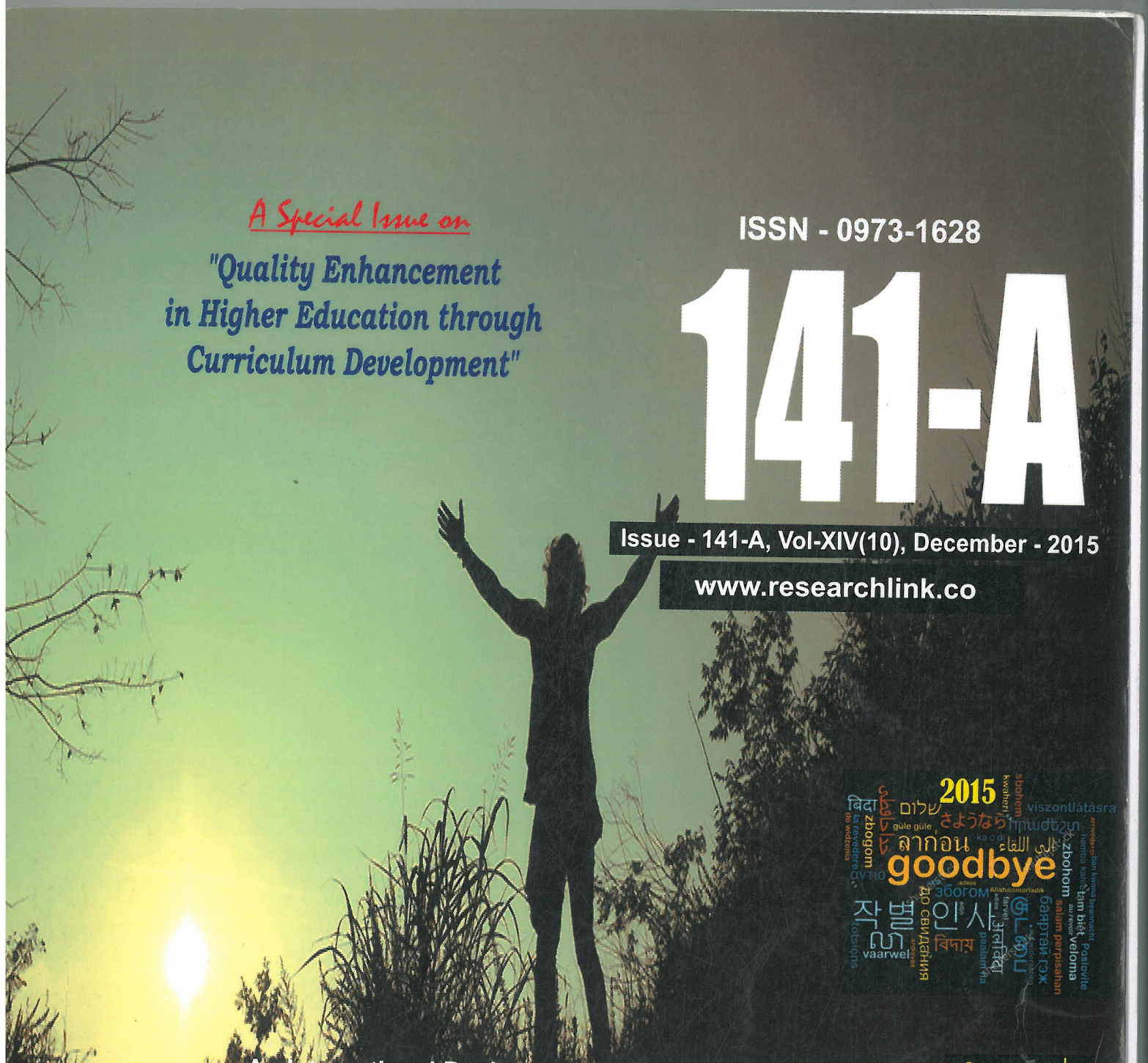

A Special Issue on

"Quality Enhancement in Higher Education through Curriculum Development"

ISSN - 0973-1628

141-A

Issue - 141-A, Vol-XIV(10), December - 2015

www.researchlink.co

An International Registered and Referred Monthly Journal

RESEARCH Link

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

Impact Factor 2.782 2015

"वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा"

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

चिंतन अनुष्ठान की प्रस्तुति

'उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधन होना अनिवार्य हैं'

गॉधी जी

किसी भी राष्ट्र का चहुंमुखी विकास उस राष्ट्र की गुणवत्तापरक उच्च शिक्षा पर निर्भर करता हैं। वर्तमान समय में शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में उद्देश्यों को ही सर्वाधिक महत्व दिया गया हैं। उद्देश्य साध्य होते है तथा उनकी प्राप्ति के लिए साधन की आवश्यकता होती है। उद्देष्यों की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन शिक्षा ही हैं एवं शिक्षा का मूलभूत आधार पाठ्यक्रम है। लेकिन विडम्बना यह है कि जीतना अधिक ध्यान उद्देश्यों पर दिया गया हैं, उतना पाठ्यक्रम विकास पर नहीं दिया जा सका हैं। उच्च शिक्षा प्रक्रिया की सार्थकता एवं प्रभावशीलता के लिए साध्य एवं साधन में समन्वय स्थापित करना अति आवश्यक हैं।

इक्कीसवीं सदी में उच्च शिक्षा की चुनौतियों से निपटने हेतु हमें भविष्य को दृष्टिगत कर नियोजित नीतियों एवं कार्यक्रमों को व्यवहार के धरातल पर लाकर कार्यरूप देना होगा चूंकि हमारे उच्चशिक्षा के लक्ष्य तो महान है, लेकिन उनके साधनों की लघुता हैं ।

उच्चशिक्षा में संख्यात्मक सुधार के साथ-साथ पर्याप्त गुणात्मक सुधार की नितांत आवश्यकता है। उच्चशिक्षा में गुणवत्ता ह्रास एवं उसमें सुधार की संभावनाओं को सर्वमत से स्वीकारा गया हैं। एपीआई जैसे मानदंडो की अनिवार्यता गुणवत्ता ह्यास का ही घोतक हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा जगत् को इस कसौटी पर खरा उतरने के लिए अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा से प्रय करना होगा।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन को बढ़ावा देने के लिए आई.क्यू.ए.सी. सेल द्वारा नैक प्रायोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा हैं। आशा है इस संगोष्ठी के माध्यम से हम ऐसे अनछुए पहुलओं तक पहुँचने में समर्थ होंगे, जिनकी विगत् वर्षो में गहरी अनदेखी हुई हैं। इस संगोष्ठी में विचार मंथन के माध्यम से प्राप्त अमृत कलश से उच्चशिक्षा जगत् को निस्संदेह एक नई दिशा प्राप्त होगी। जिससे वास्तविक कल्याणार्थ प्रयोजन सिद्व हो सकेगें।

रिसर्च लिंक का यह विशेषांक उच्चशिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन को इस आशा के साथ समर्पित है कि इस दिशा में लक्ष्य निर्धारण कर भविष्य की तस्वीर को सामने रखते हुए नये संकल्पों के साथ यात्रा प्रारंभ करें।

सत्र 2015 जो आज वर्तमान है, कुछ हफ्तो बाद अतीत और इतिहास का हिस्सा बन जाएगा। सत्र 2015 को अलविदा कहते हुए हम आशा करते है कि आप सभी पाठको का आने वाला कल, नववर्ष 2016 आज से बेहतर होगा। इसी उम्मीद के साथ रिसर्च लिंक एवं महाविद्यालयीन परिवार की तरफसे आप सभी को नववर्ष की अनन्त शुभकामनाओं के साथ.....

चिंतन अनुष्ठान एक कशिश भरी कोशिश है- समस्या के उस सिरे को पकड़ने की जो पकड़ से बाहर है। आपका लिखा हुआ रिसर्च लिंक के अंक 141 ए के रूप में सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है।

डॉ.(श्रीमती) हंसा शुक्ला
प्राचार्य
स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय,
हुडको भिलाई (छ.ग.)

An International, Registered and referred Monthly Journal - Impact Factor 2.782 (2015)

Contents - 141 (A)

■ Research Link - 141 (A) ■ Vol - XIV (11) ■ December - 2015 ■

- Quality Enhancement In Higher Education Through Curriculum Development
  Dr. (Mrs.) Mintu Sinha.....(6-9)
- Higher Education in India: Problems, prospective and Challenges.
  Prof. B. R. Kaushal.....(10)
- Curriculum Development –Boon For Quality Upgradation In Higher Education
  Dr. Prashant Shrivastava, Dr. Sarita Shrivastava.....(11-13)
- स्वामी विवेकानंद का चिंतन शिक्षा और मानवतावाद के विशेष संदर्भ में
  Satyam Soni ..... (14-15)
- Quality Enhancement In Higher Education Through Curriculum Development
  Dr. Hansa Shukla ..... (16-17)
- उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन स्वॉट (SWOT) विश्लेषण
  डॉ.सावित्री शर्मा .....(18-20)
- उच्च शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज की भूमिका
  श्रीमती रजनी राय एवं डॉ.सावित्री शर्मा.....(21-22)
- Benefits of Curriculum Changes and Teaching Innovations in Education System of Science and Technology in India
  Mr. Yogesh Deshmukh, Dr. Shweta Sao....(23-25)
- डॉ.. लालचन्द गुप्त 'मंगल' की दृष्टि में जीवन, साहित्य और दर्शन
  डॉ. मोनिका देवी..... (26-28)
- Interrogating Relationship Between Education And Gandhi
  Vivek Kumar Hind..... (29-31)
- Curriculum Reform In Legal Education In India
  Prof (Dr.) C. L. Patel..... (32-36)
- Quality Enhancement In Higher Education Through Curriculum Development
  Dr.Pramod Kumar Naik
  Dr. Smriti Kiran Saimons..... (37-39)
- Importance Of Curriculum Development In Quality Enhancement Of Higher Education
  Shivani Diwan, Anjali Sharma..... (40-42)
- Psychological Base Of Curricululm Development: Some Reflections
  Prabhat Kumar, Dr. Sambit Kumar Padhi.(43-45)
- A Review On: Outcome Based Curriculum Framework and Its Implementation
  Neetu Sahu, Dr. Zehra Hasan .....(46-47)
- उच्च शिक्षा में गुणवत्ता : स्वरूप और व्यवस्था
  डॉ. शंकर मुनि राय..... (48-49)
- पाठ्यक्रम विकास में मूल्यों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण
  डॉ. सुचित्रा शर्मा (स.प्रा.) .....(50-54)
- वाणिज्य शिक्षा : दशा एवं दिशा
  डॉ.आर.एल.कोसरे एवं डॉ.जी.डी.एस.बग्गा .....(55)
- Quality Sustenance in Higher Education
  Dr. (Mrs) Hansa Shukla & Sharmila Saha.(56-58)
- Overview Of The Curriculum Development Process
  Mrs. Nidhi Dave Mrs. Sweta Dave.....(59-61)
- Pedagogical Reforms In Higher Education Curriculum: A Case Study
  Miss Deepika Darshan.....(62-65)
- Quality Improvement In Home Science Education: Need Of Hour
  Dr. Reshma Lakesh, Dr. Amita Sehgal....(66-67)
- A Study On Curriculum Development Of Higher Education
  Dr. Trisha Sharma..... (68-69)
- Curriculum Development In Mathematics
  Dr.Namita Khotele.....(70-71)

An International, Registered & Referred Monthly Journal : Education
Since March 2002
Research Link-141 (A), Vol - XIV (10), December - 2015, Page No. 50-54
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

पाठ्यक्रम विकास में मूल्यों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

वर्तमान युग उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण की त्रिप्रक्रियाओं के प्रभाव से प्रभावित है, जिसने हमारी विकास की सारी परिभाषाओं के मायने बदल दिये हैं। हम जानते हैं कि विकास के आधारों में शिक्षा एक बहुत आवश्यक तत्व हैं। इसी पर संपूर्ण सामाजिक विकास टिका हुआ हैं। जनसंख्या का शिक्षित होना ही विकास को पोषित करता है, क्योंकि किसी भी देश की शिक्षा की स्थिति का सीधा संबंध उस देश की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना से होता है।

डॉ. सुचित्रा शर्मा और डॉ. ए.एन. शर्मा

अतः शिक्षा एक ऐसा साधन हैं जो समय–सापेक्ष, देश–सापेक्ष और प्रगति–सापेक्ष हैं। हर युग में शिक्षा के मायने अलग–अलग रहे। यही नहीं आज तो हर देश में इसका अर्थ अलग है। भारत में शिक्षा कथनी और करनी, कामना और कर्म, प्रयास और परिणामों के बीच के अंतर की कहानी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुच्छेद–109 में लिखा है– "शिक्षा इस समय भारत में चौराहे पर खड़ी है, न क्षेतिज विस्तार और न ही सुधार की वर्तमान गति और प्रकृति, स्थिति के अपेक्षाओं के अनुरूप है।"

यह जानकर आश्चर्य होता है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र व इसकी सबसे बड़ी आबादी वाले देश के पास शिक्षा की स्थिति विचारणीय हैं। ऐसा कोई शिक्षण संस्थान नहीं है, जिसकी गिनती विश्व स्तर पर आंकी जा सके। यहीं पर शिक्षा में गुणवत्ता और परिमाण का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्यक्रम जब निर्मित किये जाये तो उसके समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखा जाय। प्रस्तुत शोध आलेख इन्हीं द्वैतीयक तथ्यों के विश्लेषण पर केन्द्रित है। इसके अन्तर्गत मूल्यों में कमी को देखते हुए पाठ्यक्रम निर्माण के सामाजिक आधारों को देखने का प्रयास किया गया है।

प्रमुख शब्दः– पाठ्यक्रम, त्रिप्रक्रिया, मूल्य, सामाजिक परिप्रेक्ष्य, विकास।

भूमिका

किसी भी स्तर की शिक्षा का आधार पाठ्यक्रम की रचना और विकास होता है जिसका आधार विद्यमान सामाजिक व्यवस्था होती है। शिक्षा व्यवस्था और शाला एक प्रमुख सामाजिक प्रघटना के घटक हैं। जब कभी किसी नवचेतना की आवश्यकता प्रतीत होती है तब शिक्षा हथियार के रूप पुराने विचारों को काटकर नये चिंतन और मनन को जन्म देती है।

आज भारत राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से ऐसे दौर से गुजर रहा हैं। भौतिक आवश्यकताओं भी पूर्ति में संलग्न यह दौड़ हमें दिशाविहीन कर रही है। दुनिया सिमट कर अत्यन्त लघुतम रूप में बदल गई है। इन त्रिप्रक्रियाओं ने जहाँ हमें भौतिकता के आयामों को छूने की दिशा दी है वहीं हम अपनी सुस्थापित सांस्कृतिक विशेषताओं से कटने लगे हैं। रही सही कसर संचार साधनों की क्रांति ने कर दी है। फिर शिक्षा जैसी व्यवस्था कैसे अप्रभावित रह सकती है। ज्ञान के केन्द्रों में गुणात्मक विश्लेषण के स्थान पर मात्रात्मक विश्लेषण को अधिक महत्व मिलने लगा है जो संभवतः इसी नये वैज्ञानिक परिवेश का सार तत्व है।

उद्देश्य. प्रस्तुत शोध आलेख में शिक्षा के स्तरों पर निर्मित पाठ्यक्रम के विकास में मूल्यों की महत्ता की विवेचना करने का प्रयास किया गया है।

मूल्यों की शिक्षा एवं पाठ्यक्रम विकास

श्री अरविन्द ने कहा है कि "सच्ची शिक्षा वह है जो बालक भी सुषुप्त शक्तियों का उद्भव कर दे। व्यष्टि और समष्टि की

शास.वि.या.ता. स्वाशात्र स्नातकोत्तर महा. दुर्ग और इंदिरा गांधी शासकीय महा. वैशालीनगर

संकीर्ण सीमा से निकलकर बालक को मानवतावादी और समग्रवादी बनाना है।1" अर्थात् व्यक्तिगत रूप से शिक्षा पहले आत्म–विकास करती है, जो सीखने वाले में स्वस्थ व्यक्ति और समाज की बुनियाद डालती है।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली की यही विशेषता थी, परन्तु आज विभिन्नताओं का पुंज है यह शिक्षा प्रणाली। कितने सरकारी प्रयास हुए और हो भी रहे हैं समितियाँ बनी, सिफारिशें भी हुई परन्तु इन सबने शिक्षा को दोराहे पर ला खड़ा कर दिया है। जिससे आम आदमी का राष्ट्रीय चरित्र और नैतिक चरित्र बिल्कुल अलग–अलग दिखता है। शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए बने पन्द्रह से ज्यादा कमीशन और समितियाँ निर्मित हुईं। हजारों पेज के प्रतिवेदन, जिनका केन्द्रीय बिन्दु रहा कि स्थिति कैसे सुधारी जाये और शिक्षा के लक्ष्यों को जमीनी तौर से पूरा कैसे करें। दिल्ली विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर रमाकांत अग्निहोत्री के अनुसार "भारत की शिक्षा प्रणाली में ऐसा लचीलापन और जीवन की विविधता नहीं है, जड़ता है। जो जिस पटरी पर आ गया, जीवनपर्यन्त वहीं रहेगा।" याने आंकड़े कुछ और जमीनी हकीकत कुछ और। आखिर हमारी शिक्षा प्रणाली जमीनी तौर पर अपना वर्चस्व मात्र भौतिक विकास तक सीमित क्यों रखे हैं ?

त्रिप्रक्रियाओं की क्रियाशीलता से भौतिक मूल्यों के प्रति तीव्र आकांक्षा, पैकेज संस्कृति तथा हाइब्रिड संस्कृति ने हमारे सामने सिर्फ एक चकाचौंध से भरी जिंदगी परोसी है। ऐसा नहीं कि हमारा जनमानस मूल्यों से अनभिज्ञ है। उसे मूल्यों के प्रति ज्ञान है, समझ है परन्तु इनके प्रति धारणा व पालन का अभाव है।

1.श्रीवास्तव, संगीता (2012) "उच्च शिक्षा" रिलायंस पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,–15

भौतिक मूल्यों के प्रति लगाव उनकी मूल्य स्थायित्व की भावना पर प्रश्न चिन्ह है। मूल्यों के प्रति उसकी नींव कमजोर है। इन्हें जानने के बाद भी वह इन्हें आत्मसात नहीं कर पाता। सतही तौर पर विचार उत्पन्न होते हैं पर उनका संरक्षण और विकास दिखाई नहीं देता।

शिक्षा का वह रूप जो व्यक्ति के नैतिक व आध्यात्मिक पक्ष एवं जीवन संबंधी मूल्यों के विकास के लिए प्रयास करता है तथा उसमें योगदान देता है मूल्य शिक्षा कहलाता है। इस प्रकार मूल्यों शिक्षा है जो व्यक्ति को उचित एवं नैतिक संकल्प करने में सहायक होती है। भौतिकता की अंधी दौड़ में हम अपने आप को मूल्यों और आदर्शों से परे आर्कषण युक्त जीवन की ओर खींचे जा रहे है। व्यक्ति अपने व्यक्तिगत एवं शाश्वत– प्रेम, शांति, सुख, आनंद, ज्ञान, शक्ति, पवित्रता जैसे गुणों को भूलकर विकारों से ग्रस्त हो रहा है। जिसका परिणाम समाज में नकारात्मक व्यवहार के रूप में दिखाई दे रहा है।

आज हम देख रहे हैं कि भौतिक लक्ष्यों की पूर्ति में पश्चिमी परिप्रेक्ष्य के माडलों को अपना रहे हैं। नतीजा भौतिक संस्कृति का पल्लवन और पोषण अपनी चरम सीमा पर है। जबकि संस्कृति के दोनों पक्ष एक–दूसरे के पूरक हैं, केवल एक का विकास और दूसरे का पिछड़ना सांस्कृतिक विलम्बना की स्थिति का परिचायक है। देश की इस भयंकर और चिंतनीय स्थिति से शिक्षा की पूरी प्रक्रिया प्रभावित होकर दिशाहीन विकृत और निष्क्रिय होती जा रही है जो हमारे शिक्षाविदों, प्रशासकों तथा नीति निर्माताओं के लिए चुनौती है। इस पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है कि यह मूल्यहीनता की स्थिति हमें किस ओर ले जाएगी। अतः शिक्षा में पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय मूल्यों की अनिवार्यता पर ध्यान देना होगा, वरना समाज और राष्ट्र को पतनोन्मुख होने से बचा नहीं पायेंगे। देश की सुरक्षा, शांति, खुशहाली और विकास का यह एक मात्र विकल्प दिखता है कि पाठ्यक्रम निर्माण करते समय मूल्यों की धारणा हेतु प्रावधान किया जाए।

मूल्य संकट की यह स्थिति समाज के साथ–साथ शिक्षा के सभी स्तरों पर दिखाई देती है। चाहे वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो या अभिभावक हो। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी जगह यह एक खतरनाक बीमारी की तरह फैला हुआ है जो धीरे–धीरे घुन की तरह हमारी शिक्षा जैसी पवित्र व्यवस्था को खोखला कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी इस संबंध में उल्लेख किया गया है कि मूल्यों को पाठ्यक्रम में संशोधित किया जाए, शिक्षा द्वारा सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों का विकास तथा सकारात्मक विकास करने वाला पाठ्यक्रम बनाया जाए। यदि विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था नहीं की गयी तो भविष्य में समाज में अराजकता और विघटन की स्थिति पैदा हो सकती है। राधाकृष्णन ने कहा है "चरित्र ही प्रारब्ध है। चरित्र से ही किसी राष्ट्र के प्रारब्ध का निर्माण होता है तुच्छ चरित्र सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकता। अतः शिक्षा का मुख्य कार्य चरित्र निर्माण होना चाहिए।

अतः इस महत्वपूर्ण कार्य हेतु आवश्यक है कि पाठ्यक्रम को बनाते समय उक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाए। गुणवान और मुल्यवान व्यक्तित्वों के उदाहरण द्वारा शिक्षण कार्य किए जाने चाहिए। कला के विषयों के अध्यापन में ही मूल्यों की धारणा हेतु प्रावधान रखे जाए तो शिक्षा व्यवस्था में सुधार और विद्यार्थियों में वांछनीय मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

शिक्षा व्यवस्था में विद्यमान ज्ञान के दोनों रूप भौतिक एवं अभौतिक समान रूप से क्रियाशील होने चाहिये। इसमें पढ़ाये एवं सिखाये जाने वाले पाठ्यक्रम का निरूपण एवं विकास मूल्य आधारित होने चाहिये। पाठ्यक्रम के निर्माण में उन उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाये, जो सीखने वाले में कृत्रिम (वर्तमान) सामाजिक व्यवस्था की आदतों एवं विचारों का स्थान न देकर उसकी विकसित होती हुई क्रियाशीलता को पोषित करें।

स्पेन्सर2 ने इस संबंध में उल्लेख किया कि "शिक्षा देने से पहले हमारा मुख्य कार्यक्रम यह है कि हम मानव–जीवन की प्रमुख क्रियाओं को उनके महत्त्व के अनुसार वर्गीकरण करें। जो मुख्य रूप से पाँच हैं :–

1.प्रत्यक्ष रूप में आत्म संरक्षण में सहायता देने वाली, जैसे– शरीर–विज्ञान और स्वास्थ्य–विज्ञान।

2.अप्रत्यक्ष रूप से आत्म संरक्षण के लिए जीवन की आवश्यकता को पूर्ण करने में सहायता देने वाली, जैसे– भोजन, वस्त्र और मकान, जो भौतिक विज्ञान, गणित और भूगोल आदि विषय द्वारा दिया जा सकता है।

3.संतान के पालन–पोषण में सहायता देने वाली, जैसे– गृहशास्त्र, शरीर विज्ञान और बाल मनोविज्ञान के विषय हो सकते है।

4.मनोरंजन और व्यक्ति की रूचियों और भावनाओं को संतुष्ट करने वाली जैसे– कला, भाषा और साहित्य द्वारा दिया जा सकता है।

5.सामाजिक और राजनैतिक संबंधों की स्थापना और व्यक्ति को योग्य नागरिक तथा पड़ोसी बनाने में सहायता देने वाली जैसे– इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के विषय द्वारा दिया जा सकता है।

अतः पाठ्यक्रम संरचना और विकास में इन बातों का ध्यान दिया जाना चाहिये। शिक्षा का पाठ्यक्रम सर्वांगीण विकास पर आधारित हो, क्योंकि इन्हीं राजनैतिक और सामाजिक आर्थिक व्यवस्था से उत्पन्न होने वाली सामाजिक आवश्यकताएँ, मुद्दे और संघर्षात्मक स्थिति शिक्षा और उसके पाठ्यक्रम को प्रभावित करती है। स्मिथ3 ने यह स्पष्ट किया कि ''पाठ्यक्रम संचार प्रतिमान, सामाजिक परिस्थितियाँ, प्रत्याशाएँ और व्यक्तिगत मूल्यों, शाला समुदाय से बने समूह और संस्कृति का संकुल है जिन्हें सामाजिक परिप्रेक्ष्य से अलग नहीं किया जा सकता।''

पाठ्यक्रम के सामाजिक आधार इतने महत्वपूर्ण होते हैं कि इसे बनाने वालों को समाज और संस्कृति की प्रकृति को समझना होगा, क्योंकि पहले अकादमिक पाठ्यक्रम के क्षेत्र में इसके सामाजिक आधारों को पूर्ण रूप से स्पष्ट रखा गया। चार्टर में भी इस बात पर ही जोर दिया गया कि शिक्षा के उद्देश्यों को परिभाषित कर उसे मानवीय सामाजिक जीवन पर आधारित होना चाहिये।

टेलर[4] इस पूरे उद्देश्य को शिक्षण, अधिगम और समुदाय ये तीन प्रकार के तथा स्रोत पर आधारित मानते हैं। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा और पाठ्यक्रम पूर्ण रूप से सामाजिक परिवेश पर निर्भर है। समाज में होने वाले परिवर्तन पाठ्यक्रम निर्माण को प्रभावित करते हैं इन पाठ्यक्रमों के विभिन्न सामाजिक परिप्रेक्ष्य हैं जिन्हें ध्यान में रखना होगा। सांस्कृतिक हस्तान्तरण परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक लक्ष्य और समाज में मूल्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को प्रेरित करते हैं। वस्तुतः हमारा शिक्षा संसार एक ऐसा संयंत्र है, जिसके द्वारा हमारी परम्परागत व्यवस्था और समाज के अनगढ़ घटकों को नई व्यवस्था के उपयोग योग्य पुर्जे के रूप में ढाला जाता है।5

2. एलैक्स शीलू मैरी (2008) ''शिक्षा के सामाजिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य'' रजत प्रकाशन नई दिल्ली – . 275.276

3- Smith, B.O., Stanley, W.O, & Shores, J.H. (1967) In W.O. Stanley, B.O. Smith, K. D Benne, & A.W. Anderson, A.W. (Eds). Social foundations of education. New York: Dryden Press.

4- Research Article of Roomani S., Rafieian, K. & Sepahvand. E (2015) Social Foundations of Curriculum : Social equality and education. J. Life Sci. Biomed, 5(1) : P – 6

5.शर्मा, ब्रह्मदेव ''शिक्षा, समाज और व्यवस्था'' म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल च दृ 179

ऐसी स्थिति में विकसित समाज में आने वाली पीढ़ी को मूल्यों पर आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। द न्यू ऑक्फोर्ड डिक्शनरी के अनुसार– मूल्य एक मनुष्य के सिद्धांत अथवा व्यवहार के स्तर हैं। जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण है इस बारे में मनुष्य का निर्णय मूल्य कहलाता है। मूल्य वे सिद्धांत स्वपोषित नियम अथवा नीतिशास्त्रीय अवधारणाएँ हैं, जिन्हें हम अपने जीवन में अपनाते हैं। यहाँ एक सामान्य बात दिखाई देती है कि आज मूल्य शिक्षा की आवश्यकता सिर्फ बच्चों और युवाओं को है, जबकि सारा संसार मूल्यहीनता से गुजर रहा है। फिर मूल्यों की शिक्षा की जरूरत किसी खास वर्ग को नहीं, बल्कि सभी के लिए जरूरी है।

सैकड़ों वर्षो तक शिक्षाविद इस बात पर सहमत रहे हैं कि आने वाली पीढ़ी को कौन–कौन से आधारभूत मूल्यों को और किस स्तर की शिक्षा दी जानी चाहिये। पर यह शिक्षा किस तरह दी जाये, इस पर प्रयास चल रहे हैं। इस भौतिकवादी संसार में भौतिक विकास चरम स्थिति पर है, वहीं दूसरी ओर मानव अधिकारों का हनन होता दिखता है। अतः विश्व समुदाय के संदर्भ में मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा की सहयोगात्मक और महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

हम जानते हैं कि मूल्यों के सैद्धांतिक ज्ञान का कोई अर्थ नहीं होता जब तक कि उसे आचरण में न लाया जाय। न केवल वे शिक्षाविद् जो एन.सी.आर.टी., यू.जी.सी. या मानव संसाधन विकास मंत्रालय में बैठकर इस सत्य से परे पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं। विशेष पाठ्य समाग्री का संग्रह, संपादन और प्रकाशन में संलग्न हैं। जिससे शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने में अपनी भागिता सिद्ध कर सकें। शिक्षा व्यवस्था अपने उद्देश्यों को पूरा करते आने वाली पीढ़ी को मूल्यवान बना रही है या नहीं, उनके द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम सामाजिक आधारों को पुष्ट करते हों, यह आवश्यक नहीं दिखता।

लगभग 2000 वर्ष पूर्व अरस्तु ने एकदम सही परामर्श दिया था– ''नैतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेने से हम में उन पर आचरण करने की योग्यता नहीं आ जायेगी, क्योंकि सद्गुणों का विकास मुख्यतः चरित्र और आचरण की बात है। ऐसी स्थिति में

नैतिक मूल्यों का केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं है, हमें उनको आरचण में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिये या ऐसे मार्ग का अनुसरण करना चाहिये जिससे हम स्वयं अच्छे बनें।" हम भौतिक मूल्यों को प्राप्त करने के लिए पश्चिम की ओर उन्मुख हैं और वे सुख शांति की तलाश में हमारे देश में अध्यात्म की ओर आ रहे है।

अतः शिक्षा वही सार्थक होती है जो देश को सामरिक दृष्टि से अधिक से अधिक समर्थ बना सके। आज शिक्षा 'समग्र विकास' नहीं बल्कि मात्र 'सूचना' हैं। ऐसी स्थिति में पाठ्यक्रम विकास का आधार मूल्य परक होना चाहिये। हालांकि इसमें कुछ व्यावहारिक समस्याएँ आ सकती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम निर्माण में निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :–

अध्यापन प्रणाली और शिक्षक की भूमिका स्पष्ट हो अर्थात् इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने वाला शिक्षक स्वयं दक्ष और ज्ञाता हो।

मूल्य की शिक्षा क्या, कैसे और कितनी मात्रा में और किस स्तर तक दी जानी चाहिये। निर्मित पाठ्यक्रम शिक्षा की समाप्ति पर सीखने वाले में स्पष्ट अर्न्तदृष्टि एवं दूरदर्शिता को स्पष्ट करती हो।

निर्मित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में उनके भावी जीवन का आध ार हो ताकि अपने जीवन की भौतिक आवश्कताओं की पूर्ति में उसकी मूल्य परक शिक्षा सहायक हो।

सभी स्तरों पर शैक्षिक पाठ्यक्रम मूल्योन्मुख हों। ज्ञान केवल वैज्ञानिक या तकनीकी क्षेत्र तक सीमित न हों।

निर्मित पाठ्यक्रम बच्चे में चुनौतियों और समस्याओं का सामना करने के लिए आवश्यक मूल्यों की धारणा से जुड़े हों।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर, स्वास्थ लोकतंत्र, स्माज में जेण्डर समानता, पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि तथ्यों के विकास में मूल्यों की धारणा व परिपालन का अभ्यास एक धारणा है कि मूल्यों को पढ़ाया नहीं जाता वरन पकड़ा जाता हैं (टंसनम तम दवज जंनहीज इनज बंनहीज)

इसके लिए कोई पृथक अध्यापन प्रणाली नहीं बल्कि सभी विषयों क्रियाकलापों और व्यवहारों को मूल्योन्मुख बनाकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है जिसमें सभी शिक्षकों की सहभागिता अनिवार्य हो।

पाठ्यक्रम निमार्ण के भविष्य की संभावनाएँ

कटानारिक[6] ने सामाजिक परिवर्तन के 3 पक्षों को आपस में जोड़ा है। 1. संस्कृति सामाग्री 2. विज्ञान, धर्म, कला के साथ सांस्कृतिक परिवर्तन तथा 3. सामाजिक संबंधों में होने वाले परिवर्तन। जब समाज में अनियमित सांस्कृतिक परिवर्तन जो समाज में उनके आधारभूत व्यवहार को प्रभावित कर धुधलाते हैं और इन क्रियाओं के विरोध में जाने को प्रेरित करते है। टाफलर[7] जैसे भविष्यवादी कहते है कि यह सब शिक्षा में भविष्य की बुनियाद डालते हैं। पाठ्यक्रम निर्माता यदि इस बात को ध्यान में रख कि शिक्षा में पढ़ाने वाले विषय जमीनी तौर पर समाज की वर्तमान व्यवस्था से जुड़े हो। भविष्य आधारित दृष्टिकोण ही हमें सही दिशा में ले जा सकते है। मूल्यों की शिक्षा और उनके प्रति जागरूकता से संभव है।

सुझाव

इस दिशा में कुछ सुझाव दिये जा सकते हैं। कोठारी कमीशन 1966 ने शिक्षा व्यवस्था को मूल्यपरख बनाने हेतु कुछ सुझाव दिए जो प्रासंगिक है :–

1.केन्द्री व राज्य सरकारों के अधीन सभी विद्यालयों में नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जाय और निजी संस्थाओं से भी इनका पालन करने को कहा जाय।

2.समय सारिणी में इन मूल्यों से संबंधित शिक्षा के कुछ कालांश निश्चित किये जायें जो किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा न लिये जायें वरन् विद्यालय के सामान्य शिक्षक ही इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करें।

3.विश्वविद्यालय स्तर पर धर्म शिक्षा से संबंधित विभाग छात्रों और शिक्षकों की दृष्टि से विशिष्ट साहित्य तैयार करे जिसके द्वारा मूल्यों का सकारात्मक विकास हो सके।

4.सभी धर्मों के छात्रों के लिए ऐसी पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था की जाय जो विभिन्न धर्मों के आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक ज्ञान करा सकें।

कुछ सुझाव और है जो निम्न है :–

मूल्य शिक्षा को धार्मिक प्रार्थना, मंत्र, सूत्र आदि के रूप में न पढ़ाया जाए।

इसका अनौपचारिक शिक्षण किया जाना चाहिए।

---

6 Katunaric. V. (2009) Beyond "Doom and Gloom" and " Saving the World": On the Relevance of Sociology in Civic Education. Journal of Social Science Education. 8, 4, 17-25.

7 In Warner, W.L. (1936) Formal Education and the Social Structure. Journal of Educational Socialogy 9: 524-531.

शैक्षणिक संस्थाओं का वातावरण लोतांत्रिक, स्वच्छ, सौन्दर्यपूर्ण, उत्साहवर्धक, अनुशासनप्रिय और सृजनात्मक होना चाहिए।

शैक्षणिक संस्थाओं में पाठ्यक्रम सहगामी क्रिया अर्थात् सामूहिक प्रार्थना सभा से आरंभ तथा नियमित व्यायाम और योगासन द्वारा किया जाए।

मूल्यों अर्थात् प्रेम, शांति, पवित्रता, सुख, शक्ति, आनंद और ज्ञान की धारण का अभ्यास किया जाना चाहिए।

ज्ञान की परिभाषा से समझाया जाय कि मशीन मानव के लिए है, मानव मशीन के लिए नहीं भौतिक एवं नैतिक मूल्यों में संतुलन बनाये रखे। पाठ्यक्रम स्थान और समय के सापेक्ष हो। अभिभावकों और बड़ों द्वारा मूल्यों की धारणा का परिपालन हो। विषय वस्तु को पर्यावरण सामाजिक और प्राकृतिक उपयोगिता और संरक्षण से

जोड़ा जाय। वर्तमान खोज के विषय का आधार बनती चली जाती है, यह एक चक्रीय संरचना है, इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जाय।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 चन्द्रभूषण (1998) "वैश्विक परिदृश्य में भारतीय शिक्षा" रचना, वर्ष 2, अंक 11, मार्च–अप्रैल।

2 दैनिक भास्कर 24 अप्रैल 2011.3

3 जायसवाल, सीताराम (1991) "शिक्षा का सामाजिक आधार" प्रकाशन केन्द्र लखनऊ।

4 कुमार, अनिल (1998) "इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा : एक विचार" उच्च शिक्षा पत्रिका, वर्ष 6, अंक 2, ग्रीष्म।

5 पचौरी, गिरीश (2007) "शिक्षा और समाज" इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

6 सिंह, सुमित्रा (2004) "शिक्षा के विविध आयाम" वेदान्तपब्लिकेशन लखनऊ।

7 यादव, अनुपमा (2003) "शिक्षा का मूल अधिकार : कितना वास्तविक" रचना, वर्ष 6, अंक 41, नवम्बर–दिसम्बर।